Indian J. Soc. & Pol. 10 (02) :75-78 : 2023 **ISSN: 2348-0084 (PRINT)**
31 JULY 2023 **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

पुस्तक समीक्षा:संत विनोबा:व्यक्तित्व और विचार, *प्रो0 बृजेश कुमार पाण्डेय,* राधा पब्लिकेशन्स, दरियागंज,नई दिल्ली–2016,ISBN:81-7487-161-7

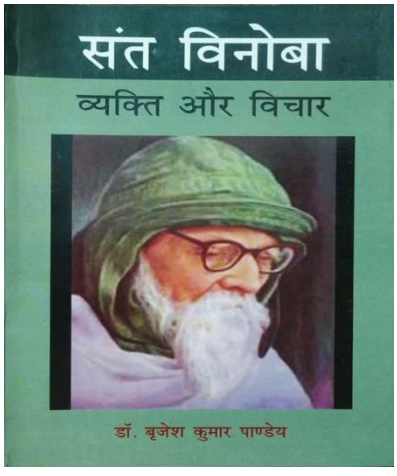

सुधीर कुमार श्रीवास्तव[1]

[1] असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, रामजी सहाय पी जी कालेज रूद्रपुर देवरिया, उ0प्र0, भारत

प्रस्तुत पुस्तक **संत विनोबाः व्यक्ति और विचार** प्रो0 बृजेश कुमार पाण्डेय की मौलिक रचना है। पुस्तक में प्रोफेसर पाण्डेय ने संत विनोबा भावे के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को बहुत ही सजीव ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। पुस्तक की प्रकृति दार्शनिक एवं ऐतिहासिक है। पुस्तक द्वैतियक तथ्यों पर आधारित है जिसके लिए लेखक ने विभिन्न लेखकों की रचनाओं का बड़ी मर्यादा के साथ उपयोग किया है एवं उनका पुस्तक में उचित स्थान पर उल्लेखकर अपनी बौद्धिक ईमानदारी का परिचय दिया है। प्रस्तुत पुस्तक कुल पाँच अध्यायों में विभक्त है। प्रथम अध्याय प्रस्तावना में लेखक ने संत विनोबा के प्रारम्भिक जीवन, निवास स्थान, परिवार सदस्यों एवं उनके व्यक्तित्व, मित्रों के साथ सम्बन्ध, शैक्षणिक जीवन, राष्ट्रपिता महात्मागांधी से सम्बन्ध एवं सार्वजनिक जीवन में प्रवेश का वर्णन किया है। लेखक ने अपनी कृति में संत विनोबा के परिवार का उल्लेख करते हुए कहा है कि उनके परिवार के सदस्य बहुत ही उदार प्रकृति के थे। परिवार में समरसता का वातावरण था। अपने और पराये में किसी प्रकार का भेद–भाव नहीं था। 'अन्धे चाचा' की मृत्यु पर संत विनोबा एवं उनकी माता के बीच हुआ वार्तालाप परिवार की संवेदनशीलता की ओर संकेत करता है। इस तस्वीर को लेखक ने बड़ी बखूबी ढंग से पुस्तक में उकेरा है।

बड़ौदा में अध्ययन काल में ही गांधीजी के भाषण के प्रभाव का उल्लेख करते हुए लेखक ने बड़ी खूबसूरती के साथ संत विनोबा के भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में प्रवेश का उल्लेख किया है। लेखक ने अपनी कृति में गाँधी जी के उस पत्र का भी उल्लेख किया है जिसमें संत विनोबा के व्यक्त्वि का वर्णन करते हुए गांधी जी ने उनके पिता को लिखा था– "तुम्हारा लड़का मेंरे पास है। इतनी छोटी अवस्था में इसने वह तेजस्विता और वैराग्य प्राप्त कर लिया, जिसके हेतु मुझे वर्षों तक प्रयत्न करना पड़ा"।

संत विनोबा की माता रखुमाई सामाजिक एवं धार्मिक प्रवृत्ति की थीं। उन्हें घर में लोगों का आना जाना एवं उत्सव का वातावरण अच्छा लगता था। लेखक ने संत विनोबा के मातृ प्रेम को उन्हीं के शब्दों में उल्लिखित करते हुए लिखा है कि – "माँ तो मुझे ऐसी मिली कि आज भी उसकी याद आती है"। लेखक ने संत विनोबा के शब्दों में बताने का प्रयास किया है कि उनकी माँ संयम एवं संतोष में विश्वास करती थीं और हर कदम पर उनके लिए प्रेरणा स्रोत थीं। संत विनोब को समझाते हुए वे कहती हैं कि "बेटा ज्यादा चीज नहीं मांगना चाहिए। ज्यादा मांगना लबाड़ीपन का चिन्ह है। मिठास तो थोड़ी सी चीच में होती है। अधिक चीजों की इच्छा करने से सुख नहीं मिलता। सच्चा सुख तो संयम में है। हमको केवल पेट भर भोजन और आवश्यकतानुसार वस्त्र के अलावा और अधिक चीजों की इच्छा नहीं करनी चाहिए।" माँ ईश्वर भक्ति के साथ–साथ देशभक्ति में भी विश्वास रखती थीं। उनका कहना था कि "देशभक्ति ही ईश्वरभक्ति है फिर भी ईश्वर भजन उसके साथ होना चाहिए"। माँ अत्यन्त सेवा भाव वाली स्त्री थीं। उनका परसेवा में अत्यधिक विश्वास था। वह बड़ी उच्चाशयी एवं उदार हृदय थीं। लेखक ने बड़ी श्रद्धा के साथ इस बात का उल्लेख किया है कि विनोबा भावे का स्वभाव बचपन से ही वैराग्य की ओर रहा है जिससे माँ काफी प्रसन्न रहती थीं। यदि वे बालक विनोबा में कोई कमी देखतीं तो कहती थीं– "विन्या, गृहस्थाश्रम को ठीक तरह से निभाने में केवल एक पीढ़ी का उद्धार होता है, उत्तम ब्रह्मचर्य के पालन से सात पीढ़ियों का उद्धार होता है"। संत विनोबा के ब्रह्मचर्य सम्बन्धी क्रियाकलाप को देखकर माँ केवल गदगद ही नहीं होती अपितु यह भी कहतीं कि – "विन्या, ईश्वर ने मुझे स्त्री बनाया है, अतः में विवश हूँ, लेकिन ईश्वर ने मुझे पुरूष बनाया होता तो में तुझसे भी कुछ बड़ा जीवन बिताकर दिखा देती"। लेखक युवा विनोबा और माँ के बीच हुए वार्तालाप में माँ के विराट स्वरूप का दर्शन कराने में सफल है। लेखक ने इसी अध्याय में संत विनोबा भावे के विद्यार्थी जीवन का भी उल्लेख किया है। संत विनोबा भावे का विद्यार्थी जीवन अत्यन्त फक्कड़ किस्म का था। वे या तो बहुत बातें करते थे या बिल्कुल ही नहीं। बात शुरू हो जाती थी तो फिर कब खत्म होगी इसका किसी को पता नहीं था। यदि कोई अकारण हँसी मजाक करता तो वह विनोबा जी के कर्कष जबाब का भागी हो जाता था। फिर भी मित्रों को उनके इस स्वभाव की आदत सी हो चली थी। भावे पुस्तकों के पढ़ने के बड़े शौकीन थे। उन्होंने बड़ौदा स्टेट लाइब्रेरी की लगभग समस्त पुस्तकें पढ़ डाली थीं। लेखक ने अपने लेखन में इस बात की ओर संकेत किया है कि संत विनोबा भावे के अन्दर देशप्रेम और राष्ट्रीय चेतना का विकास कलेज जीवन में ही हो चुका था। महात्मा गांधी के साथ सम्पर्क में आने के बाद यह और भी प्रबल हो गया। लेखक ने संत विनोबा भावे द्वारा स्थापित सत्याग्रह आश्रम का भी उल्लेख किया है जिसका उद्देश्य देशसेवकों

1: Corresponding Author

का निर्माण करना था। इस आश्रम में प्रवेश हेतु एकादश संकल्प लेना सभी के लिए आवश्यक था। इस आश्रम में युवकों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए उद्योग, भाषा, धर्म, व्यावहारिक, सामाजिक आदि विषयों की शिक्षा दी जाती थी। अध्याय के अन्त में प्रोफेसर पाण्डेय ने संत विनोबा का मूल्यांकन करते हुए लिखा है कि "आचार्य विनोब भावे भूदान आन्दोलन के जन्मदाता, भयत्रस्त मानवता को निर्भरता का पाठ सिखाने वाले सामाजिक एवं आर्थिक विषमताओं रहित सर्वहितकारी सामाजिक व्यवस्था के समर्थक एवं शान्ति के पुजारी थे। वे सर्वोदय अर्थात् सबके उदय, सबके लिए शिक्षा तथा सबके हित के सिद्धान्त के समर्थक एवं पोषक थे"।

लेखक ने इस अध्याय के आरम्भ में उस घटना का वर्णन किया है जहाँ से भूदान आन्दोलन आरम्भ होता है। लेखक ने तेलंगाना के नलगोंडा जिले के पोचमपल्ली गाँव के 18 अपैल, सन् 1951 की घटना का उल्लेख किया है जहाँ के निवासियों के वार्तालाप के बाद संत विनोबा का हृदय परिवर्तन हुआ था। गन्तव्य पर पहुँचने के बाद विनोबा भावे गाँव में घूमने निकलते हैं। हरिजन समाज की बस्ती में पहुँचकर उनसे बातें करते हैं। हरिजन समाज के लोगों ने उनसे बात करते हुए अपना दुखड़ा कहा–"हम बहुत गरीब हैं, बेकार हैं। आप हमें थोड़ी जमीन दिलाइये। उस पर मेंहनत करके हम अपना पेट भर सकेंगें"। संत विनोबा ने पूछा आप लोगों को कितनी जमींन चाहिए?" लोगों ने कहाः "यहाँ हमारे 40 परिवार हैं। अगर हमें 80 एकड़ जमीन भी मिल जाय, तो बहुत है।" गहन मंथन के बाद संत विनोबा ने सरकारी सहायता का आश्वासन दिया तो किन्तु दूसरे ही पल उन्होंने वहाँ उपस्थित लोगों से पूछ लियाः "क्या आप में से कोई" ऐसे हैं, जो इन हरिजन भाइयों की मदद कर सकें।? अगर इन्हें जमीन मिल जाय तो ये उस पर मेंहनत करने को तैयार हैं।" इस बात को सुनते ही रामचन्द्र रेड्डी ने कहाः मेंरे पिताजी चाहते थे कि हमारी 200 एकड़ जमीन में से आधी जमीन कुछ सुपात्र लोगों में बांट दी जाय। मेंरे लिए आज का यह प्रसंग एक मंगल प्रसंग है। कृपा कर मेंरी 100 एकड़ जमीन का दान आप स्वीकार कीजिये।" इस प्रकार देश में भूदान की गंगोत्री प्रकट हुई। लेखक इस मार्मिक प्रसंग का चित्रण करने में समर्थ है। इसके अतिरिक्त लेखक ने अहिंसा के साक्षात्कार के साथ ईश्वर के प्रति विनोबा के गहरे विश्वास को उजागर करने का प्रयास किया है। लेखक ने संत विनोबा भावे के निर्भीकता को भी बहुत मजबूती से उजागर किया है। उन्होंने योजना आयोग की कमियों पर टिप्पणी करते हुए तत्कालीन प्रधानमंत्री पं0 जवाहर लाल नेहरू से कहा था कि "आपने संविधान में सब नागरिकों को रोजी और रोटी देने का बचन दिया है। लेकिन अपनी इस योजना में तो आपने अपने उस बचन को बिल्कुल भुला ही दिया है। अगर आप सबको रोजी–रोटी देने की जिम्मेंदारी उठा नहीं सकते हैं, तो आपको इस्तीफा दे देना चाहिए।"

लेखक ने संत विनोबा के मध्यम से बताने का प्रयास किया है कि सर्वोदय के लिए ग्रामदान का होना अति आवश्यक है। भावे के शब्दो में "जब तक ग्रामदान नहीं होता, तब तक गाँव–गाँव में ग्राम परिवार नहीं बनता और हमारे समग्र काम के लिए हमें कोई बुनियाद नहीं मिलती.... मुझे विश्वास है कि गाँधी जी ने हमें सर्वोदय का जो कार्यक्रम दिया था, उसकी नींव ग्रामदान के इस आन्दोलन से खड़ी हो सकेगी। उसी नींव पर सर्वोदय की समूची इमारत खड़ी रहेगी। हमें समझना चाहिए कि यह गांधी– विचार का प्राण–कार्य चल रहा हे। गांधी–विचार तभी उन्नत बनेगा, जब अहिंसा के आधार पर समाज–रचना खड़ी होगी।"

लेखक ने संत विनोबा के बुनियादी शिक्षा के विचार का उल्लेख करते हुए लिखा है कि 'विनोबा जी की मान्यता थी कि विद्यार्थितियों की खातिर भौतिक तथा सामाजिक हालात तथा अन्य विषयों में अध्ययन तथा उनके सम्बन्धों को समझने में भूदान–आन्दोलन सबसे ज्यादा बुनियादी कार्यक्रम साबित हो सकता है। भूदान में भूमि, खाद्य पदार्थ, ग्रामोद्योग तथा जीवन की आर्थिक मान्यताएं सभी सम्मिलित हैं। भूदान गाँवों और शहरों, दोनों में ही शिक्षा का एक उच्चतम माध्यम बन सकता है। इस प्रकार यह प्रयास किया जाता चाहिए कि बुनियादी शिक्षा को भूदान से सम्बन्धित किया जाय, ताकि शिक्षा ज्यादा व्यावहारिक और फायदेमंद बन सके। भूदान–आन्दोलन को भी अध्यापकों तथा शिक्षार्थियों से अधिक सहयोग प्राप्त हो सकेगा।' लेखक ने संत विनोबा भावे की उस फटकार का भी उल्लेख किया है जो ऐसे अध्यापकों के लिए है जो नई शिक्षा नीति के विरूद्ध हैं। संत विनोबा भावे ऐसे शिक्षकों को सहानुभूतिपूर्ण पेंशन के साथ अवकाश पर जाने की सलाह देते हैं। लेखक ने इस अध्याय के अन्तिम पड़ाव पर संत विनोबा भावे के उस विवादास्पद बयान का उल्लेख बड़ी निर्भीकता के साथ किया है जिसमें संत विनोबा कहते हैं कि "भारत जैसे गरम देश में शिक्षा अट्ठारह वर्ष की आयु तक पूरी हो जानी चाहिए। आठ साल की बुनियादी शिक्षा के बाद चार साल की उत्तर बुनियादी और विश्वविद्यालय की शिक्षा होनी चाहिए, जो कि स्नातक के स्तर के बराबर हो।" अध्याय के अन्त में लेखक ने अपनी बात कहते हुए लिखा है कि निस्संदेह, बुनियादी तथा उत्तर–बुनियादी शिक्षा–प्राप्त लोग सरकारी कार्यों में, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, ज्यादा उपयोगी साबित होंगें और इन योजनाओं के लिए आवश्यक लोगों की भर्ती के समय उन्हें निश्चय प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

पुस्तक के तीसरे अध्याय में लेखक ने संत विनोब भावे के विद्यालय सम्बन्धी विचारों का उल्लेख किया है। संत विनोबा भावे ने कौटुम्बिक पाठशाला का सुझाव दिया है। संत विनोबा को संदर्भित करते हुए लेखक ने लिखा है कि विचारों का प्रत्यक्ष जीवन से नाता टूट जाने से विचार निर्जीव हो जाते हैं और जीवन विचार शून्य हो जाता है। मनुष्य घर में जीता है और शाला में विचार सीखता है, इसलिए जीवन और विचार का मेंल नहीं बैठता। इसका उपाय यही है कि एक ओर से घर में शाला का प्रवेश होना चाहिए ओर दूसरी ओर से शाला में घर घुसना चाहिए। समाजशास्त्र को चाहिए कि शालीन कुटुम्ब का निर्माण करे और शिक्षा शास्त्र को चाहिए कि कौटुम्बिक पाठशाला स्थापित करे। यहाँ पर शालीन कुटुम्ब के सम्बन्ध में विचार नहीं करना है। छात्रालय अथवा शिक्षकों के घर को शिक्षा की बुनियाद मानकर उस पर शिक्षण की इमारत रचने वाली शाला ही कौटुम्बिक शाला है। लेखक ने कौटुम्बिक पाठशाला में संत विनोबा द्वारा बताये गये कुछ नियमों की चर्चा की है।

1. ईश्वर निष्ठा संसार में सारवस्तु है। इसलिए नित्य के कार्यक्रम में दोनों समय सामुदायिक उपासना या प्रार्थना होनी चाहिए।
2. आहार–शुद्धि का चित्तशुद्धि से निकट का सम्बन्ध है। इसलिए आहार सात्विक होना चाहिए।
3. किसी दूसरे व्यक्ति से रसोई नहीं बनवानी चाहिए बल्कि स्वयं बनानी चाहिए यह स्वावलम्बन का एक अंग है।
4. कौटुम्बिक पाठशाला को अपने पाखाने साफ करने का काम भी अपने हाथ में लेना चाहिए।
5. अस्पृश्यों सहित सबको पाठशाला में स्थान मिलना चाहिए।
6. स्नानादि प्रातःकर्म सबेरे ही कर लेने का नियम होना चाहिए। स्नान ठण्डे पानी से ही करने का प्रयास करना चाहिए।
7. प्रातःकर्मों की तरह सोने से पहले का 'सायंक्रम' भी जरूर करना चाहिए।
8. किताबी शिक्षण के बजाय उद्योग पर ज्यादा जोर देना चाहिए।
9. शरीर को तीन घण्टे उद्योग में लगने और गृहकृत्य खुद करने का नियम रखने के बाद दोनों समय व्यायाम करने की जरूरत नहीं है।
10. सूत कातने को राष्ट्रीय धर्म तथा प्रार्थना की भाँति नित्यकर्म में गिनना चाहिए। उसके लिए उद्योग के समय के अलावा कम से कम आधा घण्टा समय देना चाहिए। इस आधे घण्टे में तकली का उपयोग करने से भी काम चल जायेगा।
11. कपड़े में खादी ही इस्तेमाल करनी चाहिए। दूसरी चीजें भी जहाँ तक सम्भव हो, स्वदेशी ही होनी चाहिए।
12. सेवा के सिवा दूसरे किसी भी काम के लिए रात को जगना नहीं चाहिए।
13. रात को भोजन नहीं करना चाहिए। आरोग्य, व्यवस्था और अहिंसा तीनों दृष्टियों से इस नियम की आवश्कता है।
14. प्रचलित विषयों में सम्पूर्ण जाग्रति रखकर वातावरण को निश्चल रखना चाहिए।

लेखक ने पुस्तक के चौथे अध्याय में संत विनोबा के दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों का विस्तार से उल्लेख किया है। लेखक ने प्रस्तुत अध्याय के आरम्भ में विनोबा भावे के उद्धृत करते हुए सर्वोदय के अर्थ पर प्रकाश डाला है। सर्वोदय का अर्थ सबका उदय जो अद्वैत के आधारभूत सिद्धान्त पर आधारित है। लेखक ने प्रस्तुत अध्याय में सर्वोदयी समाज के निर्माण के साथ–साथ राजनीतिक संरचना, आर्थिक संरचना, सर्वोदय एवं अन्तर्राष्ट्रीयता पर प्रकाश डाला है। सर्वोदय समाज आधुनिक राजनीतिक संगठन के विरूद्ध है। सर्वोदय समाज पुलिस एवं सेना की सत्ता के स्थान पर सच्ची लोकशाही का पक्षधर है। लेखक ने आगे विनोबा के सर्वोदयी समाज की आर्थिक संरचाना के चार सिद्धान्तों सादा और सरल जीवन, विकेन्द्रीकरण, स्वावलम्बन और सहयोग का उल्लेख किया है। लेखक ने संत विनोबा द्वारा संचालित भूदान आन्दोलन, बुद्धिदान आन्दोलन, जीवनदान आन्दोलन एवं सम्पत्ति दान आन्दोलन का बहुत ही सरल शब्दों में उल्लेख किया है। अध्याय के मध्य में लेखक ने विनोबा द्वारा प्रस्तुत अहिंसक शासन पद्धति एवं नई तालीम की चर्चा की है। संत विनाबा कहते हैं कि जब तक लोकनीति पूरी तरह व्यवहार्य न बन जाय तब तक हमें आदर्श अहिंसक शासन पद्धति स्थापित करने की कोशिस करनी चाहिए। जिसके निम्नलिखित लक्षण हों–

1. शासन अहिंसा पर आधारित हो।
2. समार्थों की शक्ति का उपयोग जन सेवा के लिए ही हो।
3. जनता स्वावलम्बी हो और उसमें सहकार की भावना हो।
4. सबके प्रमाणिक परिश्रम का मूल्य एक जैसा है यानि शासन स्वतंत्रता तथा समानता पर आधारित और जन कल्याणकारी होना चाहिए।

संत विनोबा का मानना था कि आज की विचित्र शिक्षा पद्धति के कारण जीवन दो टुकड़ों में बंट जाता है। लगभग आधा जीवन शिक्षा ग्रहण करने में और बाकी का जीवन प्राप्त शिक्षा की गठरी ढोने में बीत जाता है। संत विनोबा ने गांधी जी की नई तालीम अर्थात् नित्य नये समाज की रचना करने वाली शिक्षा पर जोर दिया है। लेखक ने अध्याय के अन्तिक तीसरे भाग में नई तालीम के उद्देश्यों, पठ्यक्रमों, परीक्षा, मातृ भाषा का स्थान, अनुशासन, शिक्षक एवं विद्यार्थी सम्बन्धों, नई तालीम में विद्यालय तथा स्त्री शिक्षा का विस्तार से उल्लेख किया है। लेखक ने आगे लिखा है कि विनोबा भावे जी ने सम्पूर्ण स्त्री जाति को सम्मान की दृष्टि से देखा है। गांधी जी की तरह विनाबा जी ने भी स्त्री और पुरूष को एक समान, एक–दूसरे का पूरक तथा प्रकृति की सर्वश्रेष्ठ रचना माना है। अतः वे अन्य क्षेत्रों की भांति शिक्षा के क्षेत्र में स्त्रियों और पुरूषों समाज अवसर देने का समर्थन करते हैं।

पुस्तक के पंचम अध्याय में लेखक ने संत विनोबा के दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता का मूल्यांकन किया है। प्रस्तुत अध्याय के प्रथम भाग में लेखक ने आधुनिक शिक्षा पर की गयी संत विनोबा की आलोचनात्मक टिप्पणी का उल्लेख किया है। संत विनोबा को उद्धृत करते हुए लेखक ने लिखा है कि विद्यार्थी अपने जीवन में कोई काम नहीं करते, सेवा नहीं करते, सिर्फ किताबों का अध्ययन करते रहते हैं। इससे वे ठण्ड बर्दास्त नहीं कर सकते, गर्मी सहन नहीं कर सकते और वर्षा में खट भी नहीं सकते। खेतों में काम करने में अक्षम हैं। उनसे उद्योग–धन्धें की भी कोई आशा नहीं है। संत विनोबा अंग्रजी शिक्षा पद्धति के विरूद्ध थे। लेखक ने संत विनोबा के उस सुझाव का उल्लेख किया है जिसमें भावे कहते हैं कि संस्कार–शिक्षण जनता के हाथ में और विज्ञान को सरकार को सम्भालना चाहिए। संत विनोबा मुफ्त की शिक्षा का समर्थन नहीं करते बल्कि ज्ञान के विकास में माँ की भूमिका को हृदय से सम्मान देते प्रतीत होते हैं। भावे गरीबों को मुफ्त शिक्षा देने के पक्षधर हैं। संत विनोबा अनावश्यक छुट्टियों पर कटाक्ष करते हैं। उनका मानना है कि लम्बी छुट्टियों को यथासम्भव खत्म कर देना चाहिए। गर्मी की छुट्टी प्रायः साहबों के लिए होती थे। वे इस दौरान ठंढे प्रदेशों में चले जाते थे। इस छुट्टी को यदि सम्भव हो तो बरसात में कर देना उचित रहेगा क्योंकि बरसात में खेती किसानी में काम अधिक रहता है।

लेखक ने अध्याय के दूसरे भाग में संत विनोबा के शिक्षा सम्बन्धी सुझावों का उल्लेख किया है। संत विनोबा भगवान श्री कृष्ण को आदर्श मानते हुए कहते हैं कि जैसे भगवान श्रीकृष्ण को काम करते–करते तालीम मिली थी, वैसे ही हमारे लड़कों को मिलनी चाहिए। भगवान श्रीकृष्ण गाय चराते थे, दूध दुहते थे, घर लीपते थे, मेंहनत मजदूरी करते थे, गुरु के घर जाकर लकड़ी चीरने का कार्य करते थे। वे उद्योग परक शिक्षा के हिमायती थे। शिक्षण क्रान्ति के सन्दर्भ में संत विनोबा के कुछ प्रमुख सुझाव निम्नलिखित हैं।

1. शिक्षण को सरकारी तन्त्र से स्वतंत्र बनाना चाहिए।
2. उसका माध्यम मातृभाषा होना चाहिए।
3. उसमें दूसरी भाषा का स्थान हो, परन्तु वह लाजिमी तौर पर न हो।
4. उसमें आध्यात्मिका शिक्षण का स्थान हो।
5. उसमें उद्योग का स्थान हो।
6. शिक्षक वानप्रस्थाश्रमी हो।

लेखक संत विनोबा को एक शिक्षक से अधिक विद्यार्थी मानने पर अधिक जोर दिया है। लेखक के शब्दों में विनोबा जी का विचार था कि बेसिक शिक्षा लागू करने के लिए सबसे पहले मानसिकता में परिवर्तन की आवश्यकता है। यह शिक्षा श्रम पर आधारित है। जब तक लोगों में शारीरिक श्रम के प्रति आदर का भाव उत्पन्न नहीं होगा तब तक इसकी सफलता सन्देहास्पद है।

पुस्तक के अन्त में लेखक ने सन्दर्भ ग्रन्थ सूची प्रस्तुत करके न केवल अपनी बौद्धिक ईमानदरी का परिचय दिया है अपितु अपनी कृति को वैज्ञानिक और मौलिक बना दिया है। प्रस्तुत पुस्तक की भाषा अत्यन्त ही सरल, सहज और बोधगम्य है। पुस्तक संत विनोबा के जीवन से लेकर उनके विचारों तक को एक सूत्र में पिरोती है। लेखक संत विनोबा भावे के विचारों को अपने शब्दों में प्रस्तुत करने में सफल है। कहीं कहीं लेखन अत्यन्त ही गम्भीर और असाध्य सा प्रतीत होने लगता है, लेकिन लेखक बड़ी बुद्धिमत्ता के साथ लेखन को आसन और रोचक बानाने में सफल है। पुस्तक को इस प्रकार से लिखा गया है कि साधारण से साधारण पाठक भी इसे आसानी से पढ़कर समझ सकते हैं। अन्त में कहा जा सकता है कि प्रस्तुत पुस्तक ढेढ़ सौ से कम पृष्ठों में भी ज्ञान के एक अथाह सागर को समेंटे हुए है जो न केवल विद्यार्थियों, शिक्षकों अपितु समाज के विकास से सरोकार रखने वाले जनसाधारण के लिए भी उपयोगी है।

——सुधीर कुमार श्रीवास्तव

असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, रामजी सहाय पी जी कालेज रूद्रपुर देवरिया, उ0प्र0, भारत